

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टनरतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে অষ্টনরতিতমং দশকম্ ॥

নিষ্কলব্রহ্মোপাসনা

যস্মিন্নেতদ্বিভাতং যত ইদমভর -

দ্যেন চেদং য এত -

দ্যোহস্মাদুত্তীর্ণরূপঃ খলু সকলমিদং

ভাসিতং যস্য ভাসা।

যো রাচাং দূরদূরে পুনরপি মনসাং

যস্য দেৱা মুনীন্দ্রাঃ

নো রিদ্য়ুস্তত্ত্বরূপং কিমু পুনরপরে

কৃষ্ণ তস্মৈ নমস্তে ॥ 98.1 ॥

জন্মাথো কৰ্ম নাম স্ফুটমিহ গুণদো -

ষাদিকং রা ন যস্মিন্

লোকানামুতযে যঃ স্বযমনুভজতে

তানি মাযানুসারী।

বিভ্রচ্ছক্তীররূপোহপি চ বহুতররু -

পোহরভাত্যদ্ভুতাত্মা

তস্মৈ কৈরল্যধাম্নে পররসপরিপু -

র্ণায় রিষ্ণে নমস্তে ॥ 98.2 ॥

নো তির্যঞ্চং ন মর্ত্যং ন চ সুরমসুরং

ন স্ত্রিয়ং নো পুমাংসং

ন দ্রব্যং কৰ্ম জাতিং গুণমপি সদস -

দ্বাপি তে রূপমাছঃ।

शिष्टं यं स्यान्निषेधे सति निगमशतै -
लक्ष्णारूढितस्तं
कृच्छेणारेद्यमानं परमसुखमयं
भाति तस्मै नमस्ते ॥ 98.3 ॥

मायायां विष्वितस्तुं सृजसि महदह -
क्कारतन्मात्रेभेदै -
दूतग्रामेन्द्रियादैरपि सकलजग -
त्स्रपसङ्गल्लकल्लम्।
दूयः संहृत्य सर्गं कमठ ईर पदा -
न्यान्ना कालशक्त्या
गस्त्रीरे जायमाने तमसि रितिमिरो
भासि तस्मै नमस्ते ॥ 98.4 ॥

शब्दब्रह्मेति कर्मेत्यगुरिति भगवन्
काल इत्यालपन्ति
त्त्रामेकं रिश्रहेतुं सकलमयतया
सर्गथा कल्ल्यमानम्।
रेदात्तैर्यत्तु गीतं पुरुषपरचिदा -
आभिधं तत्तु तत्तुं
प्रेम्फामात्रेण मूलप्रकृतिरिक्तिकृं
कृष्ण तस्मै नमस्ते ॥ 98.5 ॥

सत्त्वेनासत्तया रा न च खलु सदस -
त्त्वेन निर्राच्यरूपा
धत्ते यासारिद्या गुणफणिमतिर -
द्विश्रदृश्यारभासम्।
रिद्यात्त्रं सैर याता ऋतिरचनलरै -

र्यंकृपास्यन्दलाडे
संसारारण्यसद्यस्त्रुटनपरशुता -
मेति तस्मै नमस्ते ॥ 98.6 ॥

डूषासु स्पर्णरद्वा जगति घटशरा -
रादिके मृत्तिकार -
उत्ते सक्थिन्त्यमाने स्फुरति तदधुना -
प्यद्वितीयं रपुस्ते।
स्वप्नद्रष्टुः प्रबोधे तिमिरलयरिधौ
जीर्णरज्जेश्च यद् -
द्विद्यालाडे तथैर स्फुटमपि रिकसें
कृष्ण तस्मै नमस्ते ॥ 98.7 ॥

यद्धीत्योदेति सूर्यो दहति च दहनो
राति रायुस्तथान्ये
यद्धीताः पद्मजाद्याः पुनरुचितवली -
नाहरन्तेहनुकालम्।
येनैरारोपिताः प्राञ्जिनजपदमपि ते
च्यारितारश्च पश्चा -
उत्सै रिश्रं नियन्त्रे रयमपि भरते
कृष्ण कुर्मः प्रणामम् ॥ 98.8 ॥

त्रैलोक्यं भारयन्तं त्रिगुणमयमिदं
त्र्यम्बरसैकराच्यं
त्रीशानामैकरूपं त्रिभिरपि निगमै -
र्गीयमानस्वरूपम्।
तिस्रोऽरश्वा रिदन्तं त्रियुगजनिजुषं
त्रिक्रमाक्रान्तरिश्रं

त्रैकाल्ये भेदहीनं त्रिभिरहमनिशं
योगभेदैर्भजे ९राम् ॥ 98.9 ॥

सत्यं शुद्धं रिवुद्धं जयति तर रपु -
नित्यमुक्तं निरीहं
निर्द्बुद्धं निर्रिकारं निथिलगुणगण -
र्यङ्गनाधारभूतम्।
निर्मूलं निर्मलं तन्निररधिमहिमो -
ल्लासि निर्लीनमस्त -
निस्सङ्गानां मुनीनां निरुपमपरमा -
नन्दसान्द्रप्रकाशम् ॥ 98.10 ॥

दुरारं द्वादशारं त्रिशतपरिमिल -
९षष्टिपर्राभिर्रीतं
सञ्जाम्यं क्रुररेगं ऋणमनु जगदा -
च्छिद्य सङ्कारमानम्।
चक्रं ते कालरूपं र्यथयतु न तु मां
९रपदैकारलम्बं
रिषेण कारुण्यसिक्को परनपुरपते
पाहि सर्रामयौघां ॥ 98.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥